एक औंकार सतिगुरू प्रसादि
पैगाम
आत्मा
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ॥
हक
हक
तपें तपें
नमें नमें
मेरे साहिब जी
शुद्ध रूहानी सतसंग
हरि के नाम बिना दुख पावै । भगत बिना सहसा नह चूकै - गुरु इहु
भेद बतावै । कहा भइओ तीरथ ब्रत कीए - राम सरन नही आवै ।
हरि बिसरत सदा खुआरी । ता कउ धोखा कहा बिआपै - जा कउ ओट तुहारी ।
Www.9009.co.in

"दुख का कारण.....?"

सच का आधार.....!

1. हरि के नाम बिना दुख पावे । भगत बिना सहसा नह चूके – गुरु इहु भेद बतावे ।

अर्थः- हरि-नाम के जाप के बिना जीव दुःख प्राप्त करता है । भक्ति के बिना संशय का नाश नहीं होता, यह रहस्य गुरु से जाना जाता है ।

कहा भइओ तीरथ ब्रत कीए - राम सरन नही आवे । जोग जग निहफल तिह मानउ - जो प्रभ जस बिसरावे ।

अर्थः- यदि राम की शरण नहीं ली, तो तीर्थ-व्रत करने से क्या लाभ ? उस जीव के योगसाधन और यज्ञकर्म आदि बेकार हैं, जिसने परमात्मा की कीर्ति भुला दी है ।

मान मोह दोनो कउ परहर - गोबिंद के गुन गावे । कह नानक इह बिध को प्रानी - जीवन मुकत कहावे । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 830-831)

अर्थः- जीव को मान और मोह दोनों का त्याग कर परमात्मा का गुण गाना चाहिए । गुरु-कथन है कि यही विधि जीव को जीवन-मुक्त का पद प्रदान करती है ।

a. बिन हरि भजन रंग रस जेते - संत दइआल जाने सभ झूठे । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 717)

अर्थः- भगवान के भजन के अतिरिक्त सभी रस-रंगों को दयालु सन्तों ने झूठा माना है ।

b. बिन सिमरन जैसे सरप आरजारी । तिउ जीवह साकत नाम बिसारी । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 239)

अर्थः- जैसे सर्प की उम्र है, वैसे ही परमात्मा से टूटे हुए मनुष्य (की । वह)परमात्मा का नाम भुलाकर स्मरण के बिना (व्यर्थ ही) जीते हैं।

c. जीउ तपत है बारो बार । तप-तप खपै बहुत बेकार ।

अर्थः- (प्रभु के नाम में वृत्ति न रखने से) आत्मा बार-बार दुखी होती है, विकारों में ग्रस्त होकर निरन्तर परेशान होती है ।

जै तन बाणी विसर जाइ । जिउ पका रोगी विललाइ । (661)

अर्थः- जिस शरीर में प्रभु की गुणस्तुति की वाणी का विस्मरण होता है, वह शरीर ऐसे बिलखता है जैसे कोढ़ी व्यक्ति रोता है ।

2. नाम बिना जो पहिरै खाइ । जिउ कूकर जूठन मह पाइ ।

अर्थः- परमात्मा के नाम की याद के विना मनुष्य जो कुछ भी पहनता है, जो कुछ भी खाता है, (वह ऐसे है), जैसे कुत्ता जूठन में मुँह मारता फिरता है ।

नाम बिना जेता बिउहार । जिउ मिरतक मिथिआ सीगार ।

अर्थः- परमात्मा का नाम भुलाकर मनुष्य दूसरे जो भी कारय करता है, (वह ऐसे हैं) जैसे किसी मांसपिंड का शृंगार व्यर्थ है ।

नाम संग मन प्रीत न लावै । कोट करम करतो नरक जावै ।

अर्थः- (जो मनुष्य) अपने मन में परमात्मा से प्रीति नहीं जोड़ता, यह दूसरे करोड़ों काम करता हुआ भी नरक में पहुँचता है ।

हरि का नाम जिन मन न आराधा । चोर की निआई जम पुर बाधा ।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 240)

अर्थः- जिस मनुष्य ने परमात्मा का नाम स्मरण नहीं किया, वह यमपुरी में बँधा रहता है, जैसे कोई चोर (सेंध पर पकड़ा जाकर मार खाता है) ।

a. बाबा पैधा सचखंड – नउ निध नाम गरीबी पाई ।

अर्थः- गुरू बाबे जी नूं सचखंड विचों (पति दी) पुशाक मिली, नवें निधीआं, नाम ते ग़रीबी (निंम्रता) पाई (भाव नाम, ग़रीबी, पति ते नउधा भगती दी दात ते निधीआं मिलीआं) ।

बाबा देखै धिआन धर – जलती सभ प्रिथवी दिस आई ।

अर्थः- ध्यान में लीन बाबा ने पाया कि पूरी पृथ्वी (काम और क्रोध की आग से) जल रही है ।

बाझहु गुर गुबार है – है है करदी सुणी लुकाई । (भाई गुरदास वर्णन – 1-24-6)

अर्थः- गुरु के बिना घोर अंधकार है और उन्होंने आम लोगों की हाइ हाइ करदी पुकार सुनी ।

b. जगत जलंदा रख ले – आपणी किरपा धार । जित दुआरै उबरै – तितै लेहु उबार । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 853)

अर्थः- सारा संसार माया की अग्नि में जल रहा है, केवल परमात्मा ही कृपापूर्वक इसकी रक्षा कर सकता है । जिस प्रकार से भी हो सकता हो, उसी तरह बचा लो । सतगुरु के सच्चे शब्दों का मनन ही एकमात्र सुख का मार्ग है। गुरु-कथन है कि परमात्मा के बिना और कोई जीवों पर कृपा करनेवाला नहीं ।

c. हउमै नावै नाल विरोध है – दुइ न वसह इक ठाइ । (560)

अर्थः- अहंकार का परमात्मा के नाम के साथ बैर है, ये दोनों एक साथ नहीं रह सकते । अहंत्व में टिके रहने से परमात्मा की सेवा-भक्ति

नहीं हो सकती । (अहंत्व से ग्रस्त होने से भक्ति करने पर भी) मनुष्य का मन रिक्त रहता है ।

3. जीअरे ओल्हा नाम का । अवर जि करन करावनो - तिन मह भउ है जाम का ।

अर्थः- हे मेरी आत्मा ! परमात्मा के नाम का (ही) आसरा (लोक-परलोक में सहायता करता है) । (नाम के अतिरिक्त माया की खातिर) दूसरा जितना भी यत्न है, उन समस्त कार्यों में आत्मिक मृत्यु का खतरा (बनता जाता है) ।

अवर जतन नही पाईऐ । वडै भाग हरि धिआईऐ ।

अर्थः- (पर) सौभाग्यवश ही परमात्मा का स्मरण किया जा सकता है; (और स्मरण के बिना किसी भी) दूसरे यतन से परमात्मा नहीं मिलता ।

लाख हिकमती जानीऐ । आगै तिल नही मानीऐ ।

अर्थः- (भले ही जगत में) लाखों चतुराइयों के कारण इज़्ज़त प्राप्त कर लें, परलोक में तनिक मात्र भी आदर नहीं मिलता ।

अह्मबुध करम कमावने । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 211)

अर्थः- (यदि धार्मिक) कर्म भी किए जाएँ (लेकिन वह) अहंकार-युक्त बुद्धि बढ़ानेवाले हों, तो वे ऐसे कर्म रेत के घरों के समान ही हैं, जिन्हें (बाढ़ के) पानी ने बहा दिया ।

a. कोट करम करै हउ धारै । स्रम पावै सगले बिरथारे ।

अर्थः- (जो मनुष्य) करोड़ों धार्मिक कामों का अहंकार करे तो वे सारे काम व्यर्थ हैं, (उसे उन कार्यों से) थकावट ही मिलती है ।

अनिक तपसिआ करे अहंकार । नरक सुरग फिर फिर अवतार ।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 278)

अर्थः- अनेकों तप के साधन करके यदि इनका अभिमान करे, (तो वह भी) नरक, स्वर्ग में ही बार-बार जन्मता है । अनेकों यत्न करने से यदि हृदय विनम्र नहीं होता, तो कहो, वह मनुष्य प्रभु के दरबार में कैसे पहुँच सकता है ?

b. जिस नाम रिदै सोई वड राजा । जिस नाम रिदै तिस पूरे काजा ।

अर्थः- जिसके हृदय में राम-नाम विराजता है, वही बड़ा प्रतिष्ठित है । जिसके मन में हरि-नाम है, उसके सब कार्य सम्पन्न होते हैं।

जिस नाम रिदै तिन कोट धन पाए । नाम बिना जनम बिरथा जाए ।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1155)

अर्थः- हृदय में हरि-नाम जपनेवाला करोड़ों प्रकार के धन का स्वामी होता है; हरि-नाम के बिना मनुष्य-जन्म वृथा है ।

c. जिस तू आवह चित - तिस नो सदा सुख । जिस तू आवह चित - तिस जम नाह दुख ।

अर्थः- जिसके हृदय में, हे प्रभु, तुम प्रकट होते हो वह सदा सुखी होता है । जिसके मन में तुम निवास करते हो, उसे यमदूतों की त्रास नहीं होती ।

जिस तू आवह चित - तिस कि काड़िआ । जिस दा करता मित्र - सभ काज सवारिआ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 960)

अर्थः- जो तुम्हें मन में धारण करते हैं, उन्हें क्या चिन्ता ? परमात्मा स्वयं जिसका मित्र होता है, उसका सब कार्य सँवर जाता है ।

d. हरि को नाम सदा सुखदाई । जा कउ सिमर अजामल उधरिओ - गनिका हू गत पाई ।

अर्थः- (हरि-नाम की महिमा कहते हैं,) परमात्मा का नाम सदा सुख देनेबाला है । जिस नाम का स्मरण करने से अजामिल का उद्धार हुआ और गणिका-सरीखी पतिता परमगति को प्राप्त हुई (वह महान हरि-नाम सुखद है) । अजामल = (इसने एक महात्मा के कहने पर अपने पुत्र का नाम "नारायण" रखा था । "नारायण, नारायण" कहते कहते सचमुच नारायण परमात्मा से इसका प्यार बन गया)। गनिका = (तोते को "राम नाम" पढ़ाते हुए इसकी अपनी सुरति भी परमात्मा में लग गई)।

पंचाली कउ राज सभा मह - राम नाम सुध आई । ता को दूख हरिओ करुणा मै - अपनी पैज बढाई । (1008)

अर्थः- कौरवों की राज-सभा में द्रौपदी ने हरि-नाम का स्मरण किया, तो करुणामय प्रभु ने अपने विरद की लाज रखते हुए उसके दुःखों का हरण किया । (भाई गुरदास जी ने दसवीं 'वार' जो 'हा हा क्रिशन करै' लिखी है, वह आम प्रचलित इस कहानी का हवाला है । उनका अपना सिद्धांत आखिर पर है कि 'नाथ अनाथां बाण धुरां दी') ।

4. हरि बिसरत सदा खुआरी । ता कउ धोखा कहा बिआपै - जा कउ ओट तुहारी ।

अर्थः- परमेश्वर को भूल जानेवाले सदा ही अप्रतिष्ठित (प्रतिष्ठाहीन) होते हैं । हे ईश्वर ! जिन्हें तुम्हारी औट प्राप्त हो उन्हें भला किसी प्रकार का धोखा कहाँ ?

बिन सिमरन जो जीवन बलना - सरप जैसे अरजारी । नव खंडन को राज कमावै - अंत चलैगो हारी ।

अर्थः- भगवान के स्मरण के बिना जीवन व्यतीत करना साँप के समान अपनी आयु बिताना है (साँप अपनी लम्बी आयु अपना विष पालकर और छिप-छिपकर बिताता है, ऐसे ही भगवन्नाम के स्मरण बिना यह जीव अपनी इच्छा-वासनाओं के विष की जलन में जलता हुआ जीवन व्यतीत करता है)। ऐसा व्यक्ति चाहे नव-खण्ड (सम्पूर्ण पृथ्वी) का राज्य भी प्राप्त कर ले, तो भी अन्त में जीवन की बाज़ी हारकर ही जाता है ।

गुण निधान गुण तिन ही गाए - जा कउ किरपा धारी । सो सुखीआ धंन उस जनमा - नानक तिस बलिहारी । (711)

अर्थः- नानक कहते हैं - जिस पर भगवान ने अपनी कृपा की हो, वही उस गुणनिधान प्रभु के गुण गाने में समर्थ हो सकता है । सचमुच वही सुखी कहा जा सकता है और उसका ही जन्म धन्य है । ऐसे जीव के बलिहारी जाना चाहिए ।

a. जे जुग चारे आरजा - होर दसूणी होइ । नवा खंडा विच जाणीऐ - नाल चलै सभ कोइ ।

अर्थः- (योगादि साधनों से अवस्था बढ़ भी जाय तो .....!) यदि व्यक्ति की आयु चतुर्युग के बराबर हो जाय, बल्कि उससे भी दस गुणा अधिक हो; नौ खण्डों, चौदह भुवनों में उसे ख्याति प्राप्त हो जाय, समूचा विश्व उसकी आज्ञा में चलने लगे ।

चंगा नाउ रखाइ के - जस कीरत जग लेइ । जे तिस नदर न आवई - त वात न पुछै के । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 2)

अर्थः- उसकी कीर्ति देश-देशान्तर में फैल जाय और सब लोग उसका यशोगान करने लगें, तो भी यदि परमात्मा की कृपा दृष्टि उस पर न हो तो उसे कहीं सहारा नहीं ।

b. दुध बिन धेन पंख बिन पंखी - जल बिन उतभुज काम नाही । किआ सुलतान सलाम विहूणा - अंधी कोठी तेरा नाम नाही ।

अर्थः- जो गाय दूध न देवे वह किस काम की है ? जिस पक्षी के पंख न हों, जिस वनस्पति के पास जल न हो (वह व्यर्थ है) । वह बादशाह कैसा जिसे कोई सलाम न करे ? इसी प्रकार हे प्रभु ! जिस हृदय में तेरा नाम न होवे वह एक अँधेरी कोठरी ही है ।

की विसरह दुख बहुता लागै । दुख लागै तूं विसर नाही ।(354)

अर्थः- हे प्रभु ! तुम मुझे क्यों भुलाते हो ? तेरे द्वारा भुलाने पर मुझे बड़ा आत्मिक दुख होता है । हे प्रभु ! (मेरे मन से) विस्मृत न हो ।

c. जिस कउ बिसरै प्रानपत दाता - सोई गनह अभागा । (682)

अर्थः- हे भाई ! उस मनुष्य को अभागा समझो, जिसे प्राण-प्रिय प्रभु विस्मृत हो जाता है ।

d. तूं विसरह तां सभ को लागू - चीत आवह तां सेवा । (383)

अर्थः- हे प्रभु ! यदि तुम मुझे विस्मृत हो जाओ तो हरेक जीव मुझे शत्रु लगता है, लेकिन यदि तुम मेरे मन में आ बसो तो प्रत्येक जीव मेरा आदर-सत्कार करता है ।

e. विण तुध होर ज मंगणा - सिर दुखा के दुख । (958)

अर्थः- हे प्रभु, तुम्हारे बिना तुमसे कुछ और माँगना सिर पर दुःखों का बोझ उठाने के समान है । मुझे नाम-दान देकर संतुष्ट करो ताकि मन की भूख नष्ट हो सके ।

f. बिन हरि भजन रंग रस जेते - संत दइआल जाने सभ झूठे।

अर्थः- भगवान के भजन के अतिरिक्त सभी रस-रंगों को दयालु सन्तों ने झूठा माना है ।

g. खसम विसारह ते कमजात । नानक नावै बाझ सनात । (10)

अर्थः- जो जीव ऐसे परमात्मा (पति) को भुला देते हैं, वे नीच हैं । नानक कहते हैं कि नाम से विमुख जीव अपावन होते हैं ।

h. ऐसो राज न किते काज - जित नह त्रिपताए । (745)

अर्थः- हे भाई ! ऐसा राज्य किसी काम का नहीं, जिसमें मनुष्य माया से कभी तृप्त ही न हो ।

i. ए भूपत सभ दिवस चार के - झूठे करत दिवाजा । (856)

अर्थः- परमात्मा के समान कोई राजा नहीं है (स्वामी नहीं है) । अन्य सब राजा तो कुछ दिनों के लिए झूठी प्रतिष्ठा पाते हैं और अन्त को प्राप्त होते हैं (केवल हरि ही अनश्वर है) ।

j. सुलतान होवा मेल लसकर - तखत राखा पाउ । हुकम हासल करी बैठा - नानका सभ वाउ । मत देख भूला वीसरे - तेरा चित न आवे नाउ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 14)

अर्थः- यदि मैं सम्राट बन जाऊँ और सेना की शक्ति से सिंहासन पर बैठूँ; जनता से कर वसूल करूं और अपना सिक्का चलाऊँ, किन्तु यह सब भी पवन की तरह अस्थिर है; फिर भी हे नानक ! (मैं चाहता हूँ) कि इसे देखकर कही ऐसा न हो, मैं तुम्हें विस्मृत कर बैठूँ और मेरे चित्त में तुम्हारा नाम ही न बसे !

[टिप्पणी : यहाँ गुरुजी परमात्मा के प्रति जीव को प्रेरित कर रहे हैं । आगे अनेक शब्दों (पदों) में यही प्रवृत्ति चलती है । महान सम्पन्नता, अनुपम समृद्धियां पाकर भी जीव को हरि-नाम विस्मृत नहीं होना चाहिये, यही बताना इन पदों का लक्ष्य है] ।

(पाठी मां साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

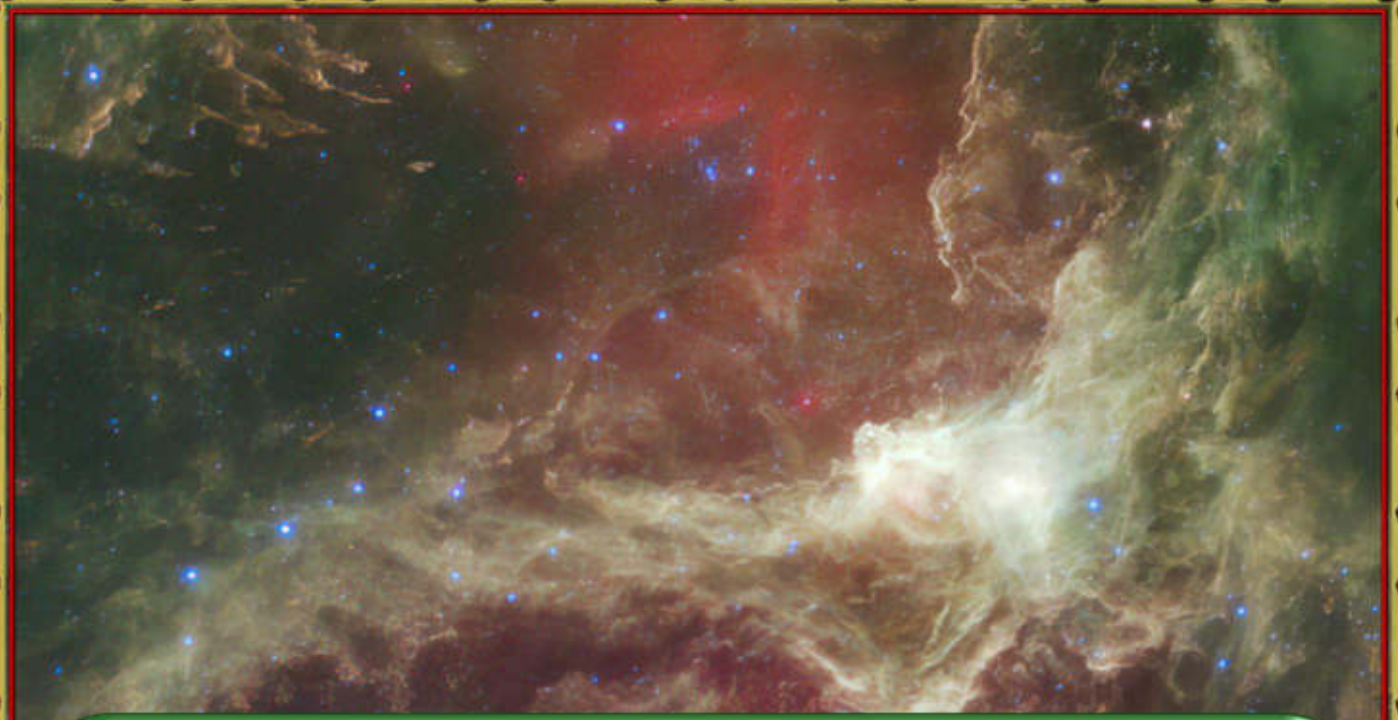

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"

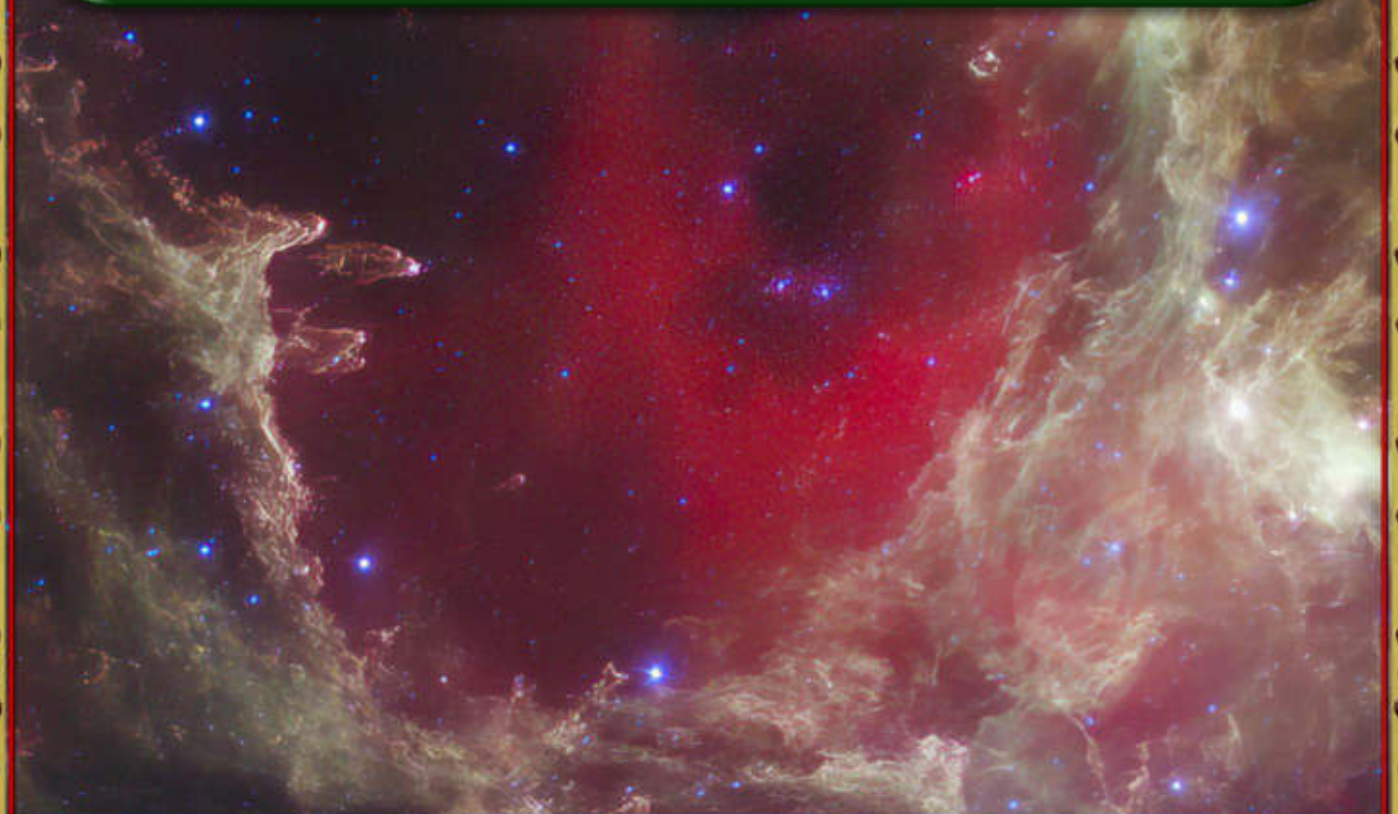

एक औंकार सतिगुरू प्रसादि
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ॥
तपः तपौ
नमौ नमः
मेरे साहिब जी
सतसंग
हरि के नाम बिना दुख पावै । भगत बिना सहसा नह चूकै - गुरु इहु
भेद बतावै । कहा भइओ तीरथ ब्रत कीए - राम सरन नही आवै ।
हरि बिसरत सदा खुआरी । ता कउ धोखा कहा बिआपै - जा कउ ओट तुहारी ।
Www.9009.co.in